बच्चा मक्खन माँगता है तो उसे मक्खन नहीं, बल्कि तमाचा मिलता है। माँ कहती है कि मक्खन खाने की चीज नहीं है, बेचने की चीज है। लेकिन गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गाँव में ही बनायेंगे तो उन्हें ये सारी चीजें बेचनी नहीं पड़ेंगी। फिर श्रीनगरवाले उनसे पूछेंगे कि क्या आप हमारे दुश्मन बने हैं ? गाँववाले जवाब देंगे कि हम आपके दुश्मन नहीं बने हैं, लेकिन हमारे बच्चे मक्खन नहीं खायेंगे तो मजबूत नहीं बनेंगे और देश की पैदावार घटेगी। इसलिए आपके लिए ही यह जरूरी है कि हमारे बच्चे मक्खन खायें। फिर श्रीनगरवाले पूछेंगे कि क्या हमें कुछ भी नहीं मिलेगा ? फिर गाँववाले कहेंगे कि हम थोड़ा-सा दे सकते हैं, लेकिन दस रुपया सेर मिलेगा। इस तरह बाजार भाव गाँववालों के हाथ में आयेगा। आज तो बाजार-भाव शहरवालों के हाथ में है। गाँववालों को अपनी चीज सस्ती बेचनी पड़ती है और खरीदने के वक्त शहर की चीज महँगी खरीदनी पड़ती है। लेकिन बाजार-भाव उनके हाथ में आने के बाद फिर यह भी होगा कि गाँववाले शहरवालों से कहेंगे कि हम आपको थोड़ा भी मक्खन नहीं दे सकते। हमारे पास इतना वक्त नहीं है कि आपके लिए गाय रखें और उसकी खिदमत करें। इसलिए आपका लड़का अगर गाँव में आयेगा और गाय की खिदमत करने के लिए राजी होगा तो हम उसे वह काम सिखा देंगे, फिर आपको मक्खन मिल सकता है। फिर श्रीनगरवाला कहेगा कि हमारा लड़का तो कालेज में पढ़ता है, वह गाँव में कैसे आयेगा ? गाँववाले कहेंगे कि अगर वह कालेज में पढ़ता है तो उसे हरकी (शाब्दिक) मक्खन मिल सकता है। लेकिन अगर वह सच्चा मक्खन चाहता है तो आपको उसे गाँव में भेजना पड़ेगा। आपको अपने एक लड़के को गाँव में भेजना ही होगा। अगर उसे दूध दुहने का इल्म हासिल नहीं है तो हम उसे वह काम नहीं देंगे, गोबर उठाने का काम देंगे। जब ऐसा होगा तो आज जो शहर का असर देहात पर पड़ता है, उसके बदले देहात का असर शहर पर पड़ेगा। आपके शहरों के कारखाने चलानेवाले मजदूर तो देहात से ही जाते हैं। लेकिन जब देहातों की जिन्दगी, सुख, चैन की बनेगी तो मजदूर शहर में क्यों जायँगे ? फिर कारखानेवालों को मजदूरों की जरूरत पड़ेगी तो उन्हें गाँववालों की शर्तें मंजूर करनी पड़ेंगी। गाँववाले कहेंगे कि आप कारखाने की मिल्कियत मुश्तरका बनायेंगे, तभी मजदूर आपके पास आयेंगे। मैंने आपके सामने नाटक का एक अंक रखा। यह नाटक हमें करना है। कारखानों की मिल्कियत मिटाने का यही तरीका है।

'महत्तर' को समझें

आज यहाँके कुछ मेहतर हमसे मिले थे। मेहतर संस्कृत लब्ज 'महत्तर' से बना है। उसके मानी हैं कि जो महान् से महान् है, वह मेहतर है। मेहतर सबसे अहम खिदमत करते हैं। पाकिस्तानवालों ने सिंध से सभी हिन्दुओं को भगाया। आज वहाँ दवा के लिए भी हिन्दू या सिख नहीं मिलेगा। लेकिन उन्होंने वहाँ के मेहतरों को जाने नहीं दिया। यों कहकर कि वह एसेंशियल सर्विस, जरूरी खिदमत है। मेहतरों के लिए मेरे दिल में बहुत हमदर्दी है। इसकी वजह आपको मालूम नहीं है। मैंने वर्षों तक रोजाना एक घंटा मेहतर का काम किया है। उस काम के लिए सूरज की ही मिसाल दी जा सकती है। जैसे सूरज रोज उगता है, वैसे ही मैं रोज वह काम करता था। या दूसरी मिसाल मेरी अपनी ही है। जिस नियमितता से मैं अभी भूदान का काम करता हूँ, उसी नियमितता से मेहतर का काम करता था। एक दिन बहुत बारिश हुई तो नदी का पानी चढ़ने की वजह से मैं उस गाँव में नहीं जा सकता था, जहाँपर मैं मेहतर का काम करता था। लेकिन मैं अपने तयशुदा वक्त पर फावड़ा लेकर नदी के पास गया और उस किनारे जो लोग खड़े थे, उनसे मैंने कहा कि गाँव के मन्दिर में जो भगवान हैं, उनको इत्तला दे दो कि गाँव का मेहतर गाँव की खिदमत के लिए आया था लेकिन पानी की वजह से उसे वापस लौटना पड़ रहा है। फिर मैंने उन लोगों से पूछा कि आप क्या सुनायेंगे ? उन्होंने कहा कि बाबाजी आये थे और वापस गये। मैंने कहा कि यह मत सुनाओ। आपके लिए मैं बाबा हूँ, लेकिन इस गाँव का मैं मेहतर हूँ।

इस तरह मैंने बहुत प्यार से मेहतर का काम किया है। दुःख की बात है कि जो सबसे अहम काम है, उसे नीच माना गया है। जब इस तरह माना जाता है तो समाज हर्गिज तरक्की नहीं कर सकता। गिबन ने रोम की सल्तनत की गिरावट की वजह बताते हुए कहा है कि रोम के लोग मेहनत मशक्कत को नीच समझने लगे, इसलिए उनकी सल्तनत खत्म हुई। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम मेहतरों के काम को नीच न मानें। उनकी सहूलियतों की तरफ ध्यान दें। आज उन्हें सिर्फ तीस रुपया वेतन मिलता है, जिनमें से तीन रुपया मकान के किराये के लिए लिया जाता है। इतने पैसे में उनका कैसे चलेगा ? उनका वेतन तो बढ़ाना ही चाहिए, लेकिन मेरी सिफारिश है कि एक पाँच सालाना योजना बनाओ और तय करो कि मेहतरों के लड़कों से मेहतरों का काम लेना हम हराम समझेंगे। इसलिए उन्हें तालीम देकर दूसरा काम देंगे। इस तरह मेहतरों की नजात (मुक्ति) का काम हमें उठाना होगा। देहली में श्री जगजीवनराम ने मेरी मौजूदगी में कहा था कि मैं किसी काम को नीचा या ऊँचा नहीं मानता हूँ, लेकिन मेहतर का काम इन्सान को हर्गिज नहीं करना चाहिए। वह इन्सानियत को गिरानेवाला काम है। मैं मानता हूँ कि उन्होंने लाजवाब दलील पेश की। इन दिनों हर धन्धे में स्पर्धा चलती है। ब्राह्मणों ने चमड़े का काम भी लिया है। लेकिन मेहतर का काम करने के लिए दूसरा कोई नहीं जाता। उसके मानी यह है कि वह काम इन्सान के लायक नहीं है। हमारे देश में हम सचमुच में आजादी चाहते हैं तो उन लोगों को हमें आजाद बनाना होगा। मेरे दिल में इस काम के लिए तड़पन है। १५ अगस्त १९४७ के दिन मैंने एक घर में पिंजड़े में तोता देखा तो कहा कि आजाद देश के बाशिन्दों के घरों में पिंजड़े में तोते नहीं रह सकते। यों कहकर मैंने तोते को रिहा कर दिया। हम आजाद हैं तो दूसरे को गुलाम नहीं रख सकते। आजादी की दो अलामतें हैं। एक—हम किसीसे दबेंगे नहीं, डरेंगे नहीं और दो—हम किसीको दबायेंगे नहीं, डरायेंगे नहीं। इन दो सिफतों से इन्सान का दिल आजाद बनता है। जहाँ कोई जालिम है और कोई मजलूम, वह देश आजाद नहीं है। जालिम भी आजाद नहीं है और मजलूम भी आजाद नहीं है। मैं चाहता हूँ कि बारामुल्ला अच्छा गाँव बने। उसके लिए मेहतरों को आजाद करना होगा। ◆◆◆

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in